बिहार की भू आकृति
(Physiography of Bihar)

बिहार की भूमि विविधता से भरी पड़ी है। राज्य के 3% भाग में सीमित विस्तार वाले शिवालिक श्रेणी है तो सुदूर दक्षिणी भाग में कैमूर की पहाड़ी स्थित है। जबकि मध्यवर्ती भाग गंगा तथा उसके सहायक नदियों (गंडक, कोसी, कमला, बलान, बूढ़ी गंडक, सोन, फल्गू तथा चानन) के द्वारा लायी गयी मिट्टियों से निर्मित समतल मैदान है।

मोटे तौर पर बिहार की भू आकृति को तीन भागों में बाँटा गया है —

1) शिवालिक श्रेणी
2) गंगा का मध्यवर्ती मैदान
3) दक्षिण का पठारी भाग

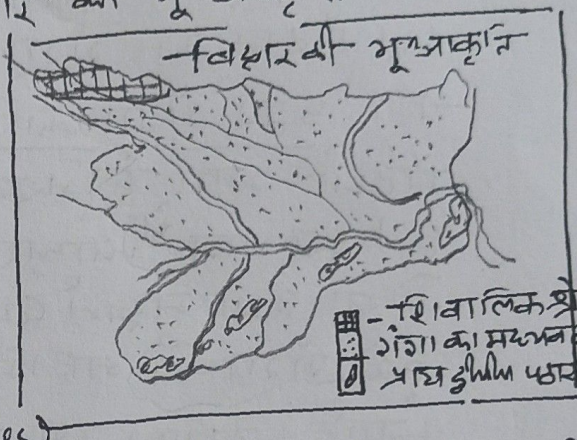

शिवालिक पर्वत श्रेणी
(Shiwalik mountain Series)

बिहार के उत्तरी पश्चिमी भाग में एक पतली-सी पहाड़ी पेटी है जो हिमालय पर्वत के शिवालिक श्रेणी का एक भाग है। यह पहाड़ी शृंखला लगभग 600 वर्ग कि० मी० क्षेत्र में फैला है। इसकी सबसे ऊँची चोटी चुमेश्वर का किला है जो समुद्र तल से 879.4 मीटर ऊपर है। इस भाग को तीन भागों में बाँटा जा सकता है —

1) दक्षिण श्रृंखला का निम्न पहाड़ी भाग - इसे रामनगर दून भी कहा जाता है। इस श्रृंखला की लम्बाई 32.18 कि० मी० तथा चौड़ाई 6 से 8 कि० मी० है। इस श्रृंखला की सबसे ऊँची चोटी 241.6 मीटर है।

2) हरहा की घाटी — रामनगर दून के उत्तर-पूर्व की ओर से हरहा की घाटी है जो 22.5 कि० मी० लम्बी है। घाटी का अधिकतर भाग समुद्र तल से 152.4 मीटर ऊँचा है।

3) चुमेश्वर की श्रेणी — यह दून घाटी के उत्तर में स्थित है। यह पहाड़ी पश्चिम में त्रिवेणी नहर के शीर्ष से शुरू होकर पूर्व में भिखना तोरी दर्रा तक जाती है। इसकी लम्बाई

लगभग 74 कि०मी० है। इसी भाग में सुमेश्वर की सबसे ऊँची चोटी सुमेश्वर का किला अवस्थित है। इस भाग में अनेक दर्रे हैं, उनमें सुमेश्वर दर्रा, मरवाट दर्रा तथा भिखना तोरी दर्रा मुख्य हैं।

2. गंगा का मध्यवर्ती मैदान (Middle Gangetic Plain)

इसे बिहार का मैदान भी कहते हैं। यह राज्य की सबसे बड़ी उच्चावचीय इकाई है। जिसका कुल क्षेत्रफल 90,650 वर्ग कि०मी० है। इस मैदान की दक्षिणी सीमा 152.4 मीटर की समोच्च रेखा द्वारा निर्धारित होती है। इस मैदान को गंगा नदी दो भागों में विभक्त करती है-

-1.) उत्तर गंगा का मैदान - यह अत्यंत समतल चौरस मैदानी भाग है जिसका कुल क्षेत्रफल 56,980 वर्ग कि०मी० है। इस भाग से घाघरा, गंडक, बूढ़ी गंडक, कमला, बलान, कोसी तथा महानंदा नदियाँ उ०प० तथा उत्तर से बहती हुई गंगा में जा मिलती हैं। तटबंध, चऊर, दियारा आदि विशिष्ट स्थलाकृतियों से भरी पड़ी है।

-2) दक्षिण गंगा का मैदान - यह मैदानी भाग उत्तर में गंगा नदी से लेकर दक्षिण में छोटानागपुर के पठार तक फैला है। इसका कुल क्षेत्र 33,670 वर्ग कि०मी० है। इस मैदानी भाग से होकर कर्मनाशा, दुर्गावती, सोन, पुन पुन, फल्गू, सकरी, चानन आदि नदियाँ दक्षिण से निकल कर उत्तर में गंगा नदी में जा मिलती हैं। इस मैदानी मैदान भाग में जगह-जगह पहाड़ियाँ मिलती हैं जो छोटानागपुर पठार का बाह्यवर्ती भाग है। ये सभी नदियाँ बरसाती हैं जो ग्रीष्म ऋतु में पूर्णतः सूख जाती हैं। टाल (Tal) तथा तटबंध इस मैदान की मुख्य विशेषता है। टाल गंगा के मैदान में स्थित वृक्ष विहीन निम्न भूमि कहा जाता है वहीं तटबंध नदियों के किनारे वाले ऊँचे भाग को कहते हैं।

दक्षिण के मैदान में स्थित पहाड़ियाँ प्राचीन काल के कठोर चट्टानों से बनी हैं। बिहार शरीफ के समीप स्थित पहाड़ी को पीर पहाड़ी, गया में स्थित रामशिला, प्रेतशिला तथा जेठियन की पहाड़ी है जो एकाकी पहाड़ियों के सुन्दर उदाहरण हैं। राजगीर में राजगीर की पहाड़ी है। इसकी ऊँचाई 446.3 मीटर है। आगे चलकर इसका विस्तार मुंगेर तथा भागलपुर जिला तक है। मुंगेर की पहाड़ी को खड़गपुर की पहाड़ी भी कहते हैं।

3. दक्षिण का पठारी भाग
(Southern Plateau Region)

यह प्रायद्वीपीय भारत का एक भाग है जो प्राचीन काल के कठोर चट्टानों से निर्मित है। इसे कैमूर का पठार भी कहते हैं। इसकी ऊँचाई समुद्र तल से 150 से 300 मीटर है। सोन नदी इस पठार को झारखंड से अलग करती है। इस अपरदित पठार में नदियाँ बहती हैं, उनमें दुर्गावती, कर्मनाशा तथा सोन मुख्य हैं। ये तीनों नदियाँ पठार से निकलकर उत्तर में बहती हुई गंगा में आ मिलती हैं। कैमूर पठार पर बहने के क्रम में ये नदियाँ जलप्रपात बनाती हैं। दुर्गावती, धुआँकुंड, पिपला भवानी, राकिम कुंड, तेल्हारकुंड, करकट मुख्य जलप्रपात हैं। कहीं-कहीं चूना पत्थर की गुफाएँ देखने को मिलती हैं उनमें गुप्तेश्वर धाम मुख्य है। कैमूर का पठार बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, सिल्ट तथा शेल से निर्मित है। इस पठार में कहीं-कहीं सल्फर भी मिलता है। कहा जाता है कि करोड़ों वर्ष पूर्व यह भू-भाग समुद्र में था। सागरीय भागों के उत्थान से कैमूर पर्वत श्रेणी की उत्पत्ति हुई है।